कम पूंजी लगाकर लाखो कैसे कमाएं,

कम लागत, ज्यादा कमाई,

कम पैसे में शुरू करें ये बिजनेस,

होगा मोटा मुनाफा

www.entrepreneurindia.co

www.entrepreneurindia.co

लघु उद्योगों का भारतीय अर्थव्यवस्था में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रहा है। लघु उद्योग देश की आ र्थक एवं औद्यो गक वकास के लए अत्यंत महत्वपूर्ण भू मका निभाते हैं। प्राचीन काल से ही भारत के लघु उद्योगों में उत्तम गुणवत्ता वाली वस्तुओं का उत्पादन होता रहा है। लघु उद्योगों में उत्पादन का अ धकांश कार्य स्वच लत और अर्ध स्वच लत मशीनों पर होता है, अतः पूंजी निवेश के अनुपात में कम व्यक्तियों को रोजगार दे पाते हैं। परन्तु बड़े स्तर पर उत्पादन करने और उसमें श्रम वभाजन के सद्धांतों एवं मशीनों और उन्नत उपकरणों का प्रयोग करने के कारण श्रेष्ठ गुणवत्तायुक्त वस्तुएँ तैयार करने में समर्थ हैं।

भारत जैसे वकासशील देश में जनसंख्या में तेजी से बढ़ती हुई श्रम शक्ति, अ धक संख्या में बेरोजगारी तथा अर्ध-बेरोजगारी आदि का संतुलन ठीक बनाये रखने के लए लघु उद्योग ही एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा देश के आ र्थक वकास का लक्ष्य प्राप्त कया जा सकता है। कम पूंजी में वस्तु निर्माण करने का उद्योग प्रारम्भ करना लघु उद्योग कहलाता है।

लघु उद्योग क्या है?

लघु उद्योग एक औद्यो गक उपक्रम है जिसमें संयंत्रा एवं मशीनरी की निवेश सीमा 5 करोड़ रुपये से अ धक नहीं होती। तथा प यह निवेश सीमा सरकार द्वारा समय-समय पर परिवर्तित की जाती है। उद्योग में काम करने वाले व्यक्तियों की संख्या और प्रयुक्त इलैक्ट्रिक पावर आदि का कोई बन्धन नहीं है।

उद्योग का चुनाव और सुझावः

कसी भी नये उद्योग को प्रारम्भ करन से पहले निम्न ल खत सुझावों का गंभीरता से अध्ययन करना चाहिए क्यों क नये उद्योग को लगाने के लए उसकी कई महत्त्वपूर्ण आवश्यकताओं का ज्ञान जरूरी है। उद्योग की सपफलता, प्रारम्भ कये जाने वाले उद्योग और उसके कई कार्यों आदि की समयानुसार पूर्ति करने पर निर्भर करता है।

1 उद्योग में नयी उत्पादन की जाने वाली वस्तु क्या है, कतनी पूंजी आवश्यक है?

2 अपने नये उद्योग की पूर्ण जानकारी, उद्योग में नई बनाई जाने वाली वस्तु के बारे में सामान्य और टैक्निकल ज्ञान।

3 कच्चे माल की उपलब्धि एवं क्वा लटी।

4 नि र्मत वस्तु व माल का मार्केट तथा बिक्री साधन।

5 उत्पादन की क्वा लटी मार्केट में उत्तम बनाना।

6 उत्पाद का मार्केट में काॅम्पीटीशन का अध्ययन।

7 उत्तम क्वा लटी उत्पाद के लए पर्याप्त पूंजी की व्यवस्था।

8 आपका उत्पाद बेचने वाले दुकानदारों को आपके द्वारा दी जाने वाली बिक्री की सु वधाएँ।

मंत्रालय अन्य मंत्रालयों विभागों के साथ सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम क्षेत्र की ओर से नीति समर्थन के कार्यों का निष्पादन भी करता है।

सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय नवीनीकरण और उद्यम को प्रोत्साहित और सम्मानित करता है। देश के विकास में सहायता करने के लिए सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय कई क्षेत्रीय कार्यालयों और तकनीकी संस्थानों के माध्यम से राज्य सरकारों, उद्योग संघों, बैंकों और अन्य हितधारकों के साथ घनिष्ठ समन्वय में काम करते हैं।

उपरोक्त बातों को ध्यान में रखते हुए उद्योग में बनायी जाने वाली वस्तु का उद्योग लगाना चाहिए।

इन्हीं के आधार पर आपका उद्योग लगाना सपफल हो सकता है।

अपने उद्योग को लगाने का स्थान बहुत ही सोच-समझकर तय करना चाहिए। उद्योग लगाने के स्थान के पास में ही कच्चे-पक्के माल को लाने ले जाने की सु वधा होनी चाहिए।

सरकार द्वारा इस श्रेणी के उद्योगों को दी जाने वाली सु वधाएँ क्या-क्या हैं वे सु वधाएँ कैसे मल सकती हैं, कन- कन वभागों से सम्पर्क आवश्यक है।

लघु उद्योग को मूल क्षेत्रा के रूप में माना जाता है। अतः लघु उद्योग स्था पत करने के लए लाइसेंस की आवश्यकता नहीं होती है। केवल सरकारी संस्थाओं से मलने वाली सु वधाएँ पाने के लए सबसे पहले उद्योग का पंजीकरण, कराना जरूरी होता है। बहुत सी ऐसी सरकारी संस्थाएं हैं जिनकी स्थापना एवं कार्य तथा उद्देश्य केवल लघु उद्योग के वकास के लए उद्य मयों को जानकारी देना, सु वधाएँ प्रदान करना आदि हैं। नये उद्य मयों को कस कार्य के लए कहाँ कस वभाग में सम्पर्क करना पड़ेगा, कौन-कौन से ऐसे संगठन हैं, जो कई प्रकार की सूचनाएँ, सु वधाएँ और टैक्नीकल जानकारी देने के लए कार्यरत हैं।

नये उद्यमी को उपरोक्त सभी व्यवस्थाएँ स्वयं करनी पड़ती हैं। जिनके लए कापफी परिश्रम और समय भी लगता है। अपनी सूझ-बूझ, प्रयास, आ र्थक शक्ति सामथ्र्य और ट्रेनिंग शक्षा की योग्यता पर ही आपके द्वारा शुरू कया जाने वाला उद्योग सपफल हो सकता है।

केन्द्र तथा राज्य सरकारों की ओर से लघु-उद्योग वकास हेतु वशेष सु वधाएँ दी जा रही हैं, जिनसे नया उद्योग शुरू करने वालों को सरकारी औपचारिकताएँ पूरी करने में मदद मलती है। इसके लए सबसे पहले अपने जिले/क्षेत्रा से संबं धत डायरेक्टर ऑफ़ इंडस्ट्रीज या उसके अधीनस्थ अ धकारी से या जिला उद्योग अ धकारी से मलकर जानकारी लें।

उनके वभाग के नियमानुसार अपनी स्कीम ल खत प्रोजेक्ट रिपोर्ट की तीन-तीन प्रतियां दें। यहाँ से कोई आपत्ति नहीं का प्रमाण पत्रा मलेगा। इसके बाद आप अपने उद्योग के रजिस्ट्रेशन संबंधी कार्यवाही करें और फर्म या कारखाने को रजिस्टर्ड करायें।

इसके बाद नगरपा लका से संबं धत कार्यों की अनुमति लेनी चाहिए। इसके लए डायरेक्टर ऑफ़ इंडस्ट्रीज की सफ़ारिश के आधार पर बिजली तथा पानी से संबं धत वभाग अपनी स्वीकृति देते हैं। उद्योग यदि ग्रामीण क्षेत्रों में अर्थात् छोटे गांवों में लगाना हो तो उस पर वशेष सरकारी आवेदन अनुमति या शहरों जैसी अन्य बंदिशें नहीं है।

यदि आपको उद्योग में लगने वाला कच्चा माल और मशीन वदेशों से मंगाने-आयात करने की आवश्यकता हो तो इसके लए डायरेक्टर ऑफ़ इंडस्ट्रीज अर्थात् इम्पोर्ट लाइसैन्स उद्योग की श्रेणी के अन्तर्गत बनाये जाते हैं जिनकी इम्पोर्ट कन्ट्रोल पॉ लसी एक निश्चित अव ध के लए ही होती है।

इम्पोर्ट मशीनों और माल को आयात करने में कठिनाइयों का हल निकालने के लए कुछ भारतीय उद्योगपतियों ने तथा नये उद्य मयों ने सीधे वदेशी-सहयोग से भी नये उद्योग लगाने का प्रयास कया है। इसके लए भारत सरकार की अनुमति अति आवश्यक है।

उद्योग की इम्पोर्ट-एक्सपोर्ट पॉ लसी के या वदेशी नीति के अन्तर्गत लाइसैन्स की स्वीकृति आदि मल सकती है, बशर्ते क वह उद्योग राष्ट्र हित की दृष्टि से ठीक माना जाता हो।

लघु उद्योगों ने बीते 50 साल में प्रगति के अनेक सोपान तय कये हैं। हमारे देश के सामाजिक एवं आ र्थक वकास में इन उद्योगों का योगदान अहम साबित हुआ है। इन्होने कम पूँजी से रोज़गार उपलब्ध कराये हैं। ग्रामीण इलाको में औद्योगीकरण का प्रकाश फैलाया है तथा क्षेत्रीय असंतुलन में कमी को दूर करने में भी महत्वपूर्ण भू मका अदा की है। लघु उद्योग में हुए वकास ने आधुनिक तकनीक अपनाने तथा लाभकारी रोजगार में श्रम शक्ति का अवशोषण करने के लए उद्यमशीलता की प्रतिभा का उपयोग करने को प्राथ मकता प्रदान की है जिससे उत्पादकता और आय के स्तर को बढ़ाया जा सके।

लघु उद्योग, स्वरोजगार व प्रबन्ध क्षेत्रों में मार्गदर्शक के रूप में कार्य करते हैं। लघु, कुटीर व घरेलू उद्योग परियोजनाएं नए उद्यमी व संभा वत उद्य मयों को उद्योग. व्यवसाय की स्थापना व संवर्द्धन की दिशा में प्रेरित करती हैं जिससे वे देश के आ र्थक वकास में अपना योगदान बढ़ा सकें।

Table of Contents

www.entrepreneurindia.co

आटा उत्पादन उद्योग

बेकरी उद्योग

हर्बल शैम्पू उद्योग

सेवई उद्योग

नूडल निर्माण उद्योग

सैनिटरी नैप कन उद्योग

बिस्कुट उद्योग

मक्के फ्लेक्स(Corn Flakes)

आलू चप्स उद्योग

मैकरोनी (गोल्ड फंगर) उद्योग

Popcorn उद्योग

केक एवं पेस्ट्री उद्योग

फनायल उद्योग

वर्मीकल्चर उद्योग

आइसक्रीम कोन उद्योग

लपस्टिक (Lipstick) उद्योग

अगरबत्ती उद्योग

हवाई चप्पल उद्योग

फेस पाउडर उद्योग

Mosquitto Coil

सर्जिकल काटन उद्योग

वुडन टूथ पक उद्योग (Toothpick)

डटरजेंट पाउडर (Detergent Powder)

मसाला उद्योग (Spices)

See more

http://goo.gl/2KrF8G
http://goo.gl/3857gN
http://goo.gl/gUfXbM
http://goo.gl/Jfo264
http://goo.gl/f3hnCo

Free Instant Online Project Identification and Selection Service

Our Team has simplified the process for you by providing a "Free Instant Online Project Identification & Selection" search facility to identify projects based on multiple search parameters related to project costs namely: Plant & Machinery Cost, Total Capital Investment, Cost of the project, Rate of Return% (ROR) and Break Even Point % (BEP). You can sort the projects on the basis of mentioned pointers and identify a suitable project matching your investment requisites.....Read more

Download Complete List of Project Reports:

- **Detailed Project Reports**

NPCS is manned by engineers, planners, specialists, financial experts, economic analysts and design specialists with extensive experience in the related industries.

Our Market Survey cum Detailed Techno Economic Feasibility Report provides an insight of market in India. The report assesses the market sizing and growth of the Industry. While expanding a current business or while venturing into new business, entrepreneurs are often faced with the dilemma of zeroing in on a suitable product/line.

And before diversifying/venturing into any product, they wish to study the following aspects of the identified product:

- **Good Present/Future Demand**
- **Export-Import Market Potential**
- **Raw Material & Manpower Availability**
- **Project Costs and Payback Period**

The detailed project report covers all aspect of business, from analyzing the market, confirming availability of various necessities such as Manufacturing Plant, Detailed Project Report, Profile, Business Plan, Industry Trends, Market Research, Survey, Manufacturing Process, Machinery, Raw Materials, Feasibility Study, Investment Opportunities, Cost and Revenue, Plant Economics, Production Schedule,

Working Capital Requirement, uses and applications, Plant Layout, Project Financials, Process Flow Sheet, Cost of Project, Projected Balance Sheets, Profitability Ratios, Break Even Analysis. The DPR (Detailed Project Report) is formulated by highly accomplished and experienced consultants and the market research and analysis are supported by a panel of experts and digitalized data bank.

We at NPCS, through our reliable expertise in the project consultancy and market research field, have demystified the situation by putting forward the emerging business opportunity in India along with its business prospects……Read more

Visit us at

www.entrepreneurindia.co

Take a look at NIIR PROJECT CONSULTANCY SERVICES on #Street View

https://goo.gl/VstWkd

NIIR PROJECT CONSULTANCY SERVICES

An ISO 9001:2015 Company

Contact us

NIIR PROJECT CONSULTANCY SERVICES

106-E, Kamla Nagar, New Delhi-110007, India.

Email: npcs.india@gmail.com, info@niir.org

Tel: +91-11-23843955, 23845654, 23845886

Mobile: +91-9811043595

Website :

www.niir.org

www.entrepreneurindia.co

Take a look at NIIR PROJECT CONSULTANCY SERVICES on #StreetView

https://goo.gl/VstWkd

Follow Us

➢https://www.linkedin.com/company/niir-project-consultancy-services

➢https://www.facebook.com/NIIR.ORG

➢https://www.youtube.com/user/NIIRproject

➢https://plus.google.com/+NIIRPROJECTCONSULTANCYSERVICESNewDelhi/posts

➢https://twitter.com/npcs_in

➢ https://www.pinterest.com/npcsindia/

THANK YOU!!!

For more information, visit us at:

www.niir.org

www.entrepreneurindia.co